

अथर्ववेद

काण्ड २

सूक्त १७

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaanda 2

Sookta 17

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

ईश्वर ही बल, तेज व सामर्थ्य का स्रोत है। इस सूक्त में ईश्वर से हमें भी तेजस्वी, बलशाली और सामर्थ्यवान बनाने के लिए प्रार्थना की गई है।

प्रथम मन्त्र में हमें ओजस्वी बनाने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। ओजःप्रभृतिनि देवता। ८ अक्षराणि। एकपदाऽऽसुर्यतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः।

ओजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा ॥१॥

अथर्व २:३:१७:१

ओजः। असि। ओजः। मे। दाः। स्वाहा ॥१॥

हे ईश्वर! आप अपने (ओजः) ओज से शत्रुओं के मन से शत्रुता का भाव नष्ट कर देते (असि) हो। (मे) मुझे भी ऐसा (ओजः) ओज (दाः) प्रदान करें। यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे।

दूसरे मन्त्र में हमें सहनशीलता प्रदान करने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। ओजःप्रभृतिनि देवता। ९ अक्षराणि। एकपदाऽऽसुरी जगती छन्दः। निषादः स्वरः।

सहोऽसि सहो मे दाः स्वाहा ॥२॥

अथर्व २:३:१७:२

सहः। असि। सहः। मे। दाः। स्वाहा ॥२॥

हे ईश्वर! आप तटस्थ भाव वाले (सहः) सहनशक्ति के पुञ्ज (असि) हो। (मे) मुझे भी (सहः) सहनशक्ति (दाः) प्रदान करें। यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे।

तीसरे मन्त्र में हमें बलवान बनाने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। ओजःप्रभृतिनि देवता। १० अक्षराणि। एकपदाऽऽसुरी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

बलमसि बलं मे दाः स्वाहा ॥३॥

अथर्व २:३:१७:३

बलम्। असि। बलम्। मे। दाः। स्वाहा ॥३॥

हे ईश्वर! आप ही (बलम्) बल के स्रोत (असि) हो। (मे) मुझे भी (बलम्) बल (दाः) प्रदान करें। यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे।

चौथे मन्त्र में हमें दीर्घायु बनाने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। ओजःप्रभृतिनि देवता। ९ अक्षराणि। एकपदाऽऽसुरी जगती छन्दः। निषादः स्वरः।

आयुरस्यायुर्मे दाः स्वाहा ॥४॥

अथर्व २:३:१७:४

Synopsis

God is the source of all strength, brilliance and abilities. This composition contains prayers to him to make us strong, brilliant and capable.

In the first mantra the sage offers prayers for granting us brilliance.

ṛiṣhiḥ brahmaa, **devataa** ojaḥprabhṛiteeni, **vowels** 8, **chhandah** ekapadaa aasury atijagatee, **svarah** niṣhaadaḥ.

1. ojo'syojo me daah svaahaa.

Atharva 2:3:17:1

ojaḥ asi ojaḥ me daah svaahaa.

O God! With your (ojaḥ) aura (asi) you remove the animosity from the hearts of the enemies. Please (daah) grant (me) me similar (ojaḥ) brilliance as well. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the second mantra the sage offers prayers for granting us resilience.

ṛiṣhiḥ brahmaa, **devataa** ojaḥprabhṛiteeni, **vowels** 9, **chhandah** ekapadaa aasuree jagatee, **svarah** niṣhaadaḥ.

2. saho'si saho me daah svaahaa.

Atharva 2:3:17:2

sahaḥ asi sahaḥ me daah svaahaa.

O God! You (asi) are impartial and the ocean of (sahaḥ) fortitude. Please (daah) grant (me) me (sahaḥ) resilience as well. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the third mantra the sage offers prayers for granting us strength.

ṛiṣhiḥ brahmaa, **devataa** ojaḥprabhṛiteeni, **vowels** 10, **chhandah** ekapadaa aasuree triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

3. balamasi balam me daah svaahaa.

Atharva 2:3:17:3

balam asi balam me daah svaahaa.

O God! You (asi) are the source of all (balam) strength. Please (daah) grant (me) me (balam) strength as well. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the fourth mantra the sage offers prayers for granting us long life.

ṛiṣhiḥ brahmaa, **devataa** ojaḥprabhṛiteeni, **vowels** 9, **chhandah** ekapadaa aasuree jagatee, **svarah** niṣhaadaḥ.

4. aayurasyaayurme daah svaahaa.

Atharva 2:3:17:4

आयुः । असि । आयुः । मे । दाः । स्वाहा ॥४॥

हे ईश्वर! आप ही (आयुः) जीवन का आधार (असि) हो । (मे) मुझे भी (आयुः) आयु (दाः) प्रदान करें । यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे ।

१० मात्राओं वाले एकपदाऽऽसुरी त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध पाँचवे मन्त्र में हमें श्रवणशील बनाने के लिए प्रार्थना है ।

ब्रह्मा ऋषिः । ओजःप्रभृतिनि देवता । १० अक्षराणि । एकपदाऽऽसुरी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः स्वाहा ॥५॥

अथर्व २:३:१७:५

श्रोत्रम् । असि । श्रोत्रम् । मे । दाः । स्वाहा ॥५॥

हे ईश्वर! आप ही (श्रोत्रम्) श्रवणशक्ति के स्रोत (असि) हो । (मे) मुझे भी (श्रोत्रम्) श्रवणशक्ति (दाः) प्रदान करें । यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे ।

छठे मन्त्र में हमें चक्षुवान बनाने के लिए प्रार्थना है ।

ब्रह्मा ऋषिः । ओजःप्रभृतिनि देवता । १० अक्षराणि । एकपदाऽऽसुरी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः स्वाहा ॥६॥

अथर्व २:३:१७:६

चक्षुः । असि । चक्षुः । मे । दाः । स्वाहा ॥६॥

हे ईश्वर! आप ही (चक्षुः) ब्रह्माण्ड के द्रष्टा (असि) हो । (मे) मुझे भी (चक्षुः) दृष्टि शक्ति (दाः) प्रदान करें । यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे ।

सातवे मन्त्र में हमें सामर्थ्यवान बनाने के लिए प्रार्थना है ।

ब्रह्मा ऋषिः । ओजःप्रभृतिनि देवता । १४ अक्षराणि । आसुर्युष्णिक् छन्दः । ऋषभः स्वरः ।

परिपाणमसि परिपाणं मे दाः स्वाहा ॥७॥

अथर्व २:३:१७:७

परिऽपानम् । असि । परिऽपानम् । मे । दाः । स्वाहा ॥७॥

हे ईश्वर! आप ही (परिपाणम्) सब ओर से रक्षा व पालन करने वाले (असि) हो । (मे) मुझे भी अपने आश्रितों की (परिपाणम्) रक्षा व पालन का सामर्थ्य (दाः) प्रदान करें । यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे ।

Atharvaveda - Prapaathaka 3, Kaanda 2, Anuvaaka 3, Sookta 17

aayuh asi aayuh me daah svaahaa.

O God! You (asi) are the sustainer of all (aayuh) life. Please (daah) grant (me) me (aayuh) long life as well. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the fifth mantra the sage offers prayers for granting us listening skills.

ṛiṣhiḥ brahmaa, **devataa** ojaḥprabhṛiteeni, **vowels** 10, **chhandah** ekapadaa aasuree triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

5. shrotramasi shrotram me daah svaahaa.

Atharva 2:3:17:5

shrotram asi shrotram me daah svaahaa.

O God! By the virtue of being omnipresent, (asi) you (shrotram) hear every sound of the universe. Please (daah) grant strength in (me) my (shrotram) hearing as well. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the sixth mantra the sage offers prayers for granting us sight.

ṛiṣhiḥ brahmaa, **devataa** ojaḥprabhṛiteeni, **vowels** 10, **chhandah** ekapadaa aasuree triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

6. chakṣhurasi chakṣhurme daah svaahaa.

Atharva 2:3:17:6

chakṣhuḥ asi chakṣhuḥ me daah svaahaa.

O God! By the virtue of being omnipresent, (asi) you are the (chakṣhuḥ) witness to each and every event of the universe. Please (daah) grant strength in (me) my (chakṣhuḥ) sight as well. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the seventh mantra the sage offers prayers for granting us capabilities.

ṛiṣhiḥ brahmaa, **devataa** ojaḥprabhṛiteeni, **vowels** 14, **chhandah** aasury uṣṇik, **svarah** riṣhabhaḥ.

7. paripaanamasi paripaanam me daah svaahaa.

Atharva 2:3:17:7

pari-paanam asi pari-paanam me daah svaahaa.

O God! (asi) You (paripaanam) protect and sustain all. Please (daah) make (me) me capable of (paripaanam) protecting and nurturing those who depend on me. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!